भारतीय बाल रोग अकादमी (आईएपी)

भारत में कोविड-19 की तीसरी लहर पर आईएपी का दृष्टिकोण

प्रश्न: आने वाले महीनों में कोविड की तीसरी लहर की क्या संभावना है?

महामारी का स्वभाव होता है अनेक लहरों में आना और हर लहर असंख्य लोगों को प्रभावित करती है।आख़िरकार अधिकतम लोगों में लक्षणों के साथ या बिना लक्षणों के संक्रमण हो जाता है।समय के साथ बीमारी का या तो ख़ात्मा हो जाता है या सिमट के वह कुछ ही जगह रह जाती है।

पते की बात : तीसरी लहर की संभावना है, पर इसके समय और तीव्रता का अनुमान कठिन है!

प्रश्न: मीडिया में चल रही बहस के मुताबिक़ क्या बच्चों में इसका ख़तरा ज़्यादा है?

पहली लहर का असर बुज़ुर्गों में और अन्य बीमारियों से ग्रस्त लोगों में ज़्यादा देखा गया। दूसरी लहर में ३०-४५ वर्ष के लोग और बग़ैर दूसरी बीमारियों के भी प्रभावित हुए।आने वाले समय में हम कोविड के लिये लगातार सुझाए जा रहे उपयुक्त व्यवहार का पालन नहीं करेंगे, तो संभावित तीसरी लहर का असुरक्षित लोगों पर, जिनमें बच्चे भी शामिल होंगे, असर पड़ेगा।

हाल ही में किये गये "**sero survey**" (दिसंबर २० से जनवरी २१) से से यह पता चला है कि १०-१५ वर्ष के बच्चों में बड़ों की ही तरह संक्रमण की दर २०-२५ % थी। इससे यह पता चला कि बच्चे बड़ों की ही तरह संक्रमित तो होते हैं पर उतने गंभीर रूप से बीमार नहीं।

पते की बात : बच्चों में बड़ों की ही तरह संक्रमित होने की संभावना होती है पर गंभीर बीमारी का ख़तरा उनके बराबर नहीं होता। इस बात की संभावना अत्यंत कम है कि तीसरी लहर विशेष तौर पर या केवल बच्चों को प्रभावित करेगी ।

प्रश्न: क्या इस लहर में बड़ों में देखी जा रही बीमारी की गंभीरता बच्चों में भी दिखाई देगी?

राहत की बात यह है कि अनेक कारणों से बच्चे अपेक्षाकृत कम प्रभावित हुए हैं। बच्चों में कोरोना वायरस के लिये ज़रूरी रिसेप्टर्स की कम उपलब्धता और उनकी प्रतिरोधक क्षमता इसके प्रमुख कारण हैं।बच्चों का बहुत कम प्रतिशत गंभीर या तीव्र बीमारी से प्रभावित होता हैं ।अगर बीमार पड़ने वाले लोगों की संख्या में बहुत ज़्यादा वृद्धि होगी तब बच्चों में भी इसका असर पड़ सकता है ।

संक्रमण के अलावा, मानसिक स्वास्थ्य के मसलों पर भी पालकों को ध्यान देना होगा, साथ ही हमारे द्वारा सुझाए गए स्क्रीन टाईम और स्कूलों के फिर से खुलने की स्थिति में सुरक्षित रहने के उपायों पर भी ।

पते की बात : बच्चों में होनेवाले संक्रमण ९०% से अधिक बच्चों में बिना लक्षणों के या एकदम साधारण लक्षणों के साथ होते हैं और उनमें गंभीर बीमारी होने की संभावना ज़्यादा नहीं है।

प्रश्न: तो क्या आप तीसरी लहर में बच्चों में गंभीर बीमारी होने की संभावना से इंकार नहीं कर रहे हैं?

जैसा कि ऊपर हमने चर्चा की, बड़ों के विपरीत बच्चों में बीमारी के गंभीर स्वरूप की संभावना कम दिखाई दे रही है, इसलिए तीसरी लहर में ऐसा होने की संभावना दूरस्थ ही है। पहले के दोनों दौरों में गंभीर बीमार बच्चों में भी आइ सी यू में भर्ती करने की ज़रूरत बहुत कम बच्चों में ही पड़ी है।

हाँ, आशावान रहते हुए भी अनहोनी के लिए तैयार रहना ही बुद्धिमानी है।

पते की बात : इस बात से इंकार नहीं कि बच्चों में गंभीर बीमारी हो सकती है। पर अभी तक कोई सुबूत नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि तीसरी लहर में संक्रमित होने वाले अधिकांश बच्चों में यह गंभीर रूप लेने वाली है।

प्रश्न: हमने तो सुना है कि बच्चों में गंभीर बीमारी तो पहले से ही हो रही है, आपकी इस बारे में क्या राय है?

हाँ, बच्चों में गंभीर निमोनिया और उनकी सुरक्षा प्रणाली के अनियंत्रित हो जाने से MIS-C (Multi system inflammatory Syndrome) अवश्य देखने में आये हैं। MIS-C प्रति लाख लोगों में १-२ में देखा गया है, कुछ में यह गंभीर भी हो सकता है, समय रहते इसका इलाज करने पर अधिकतर बच्चों में यह ठीक हो जाता है, अक्सर संक्रमण के २-६ हफ़्तों बाद होता है, और आमतौर पर इस दौरान संक्रमण एक से दूसरे को फैलता भी नहीं है।

पते की बात : हाँ, कभी-कभी बच्चों में बीमारी गंभीर रूप ले लेती है और उन्हें शुरुआत में या कुछ हफ़्तों के अंतराल में आई.सी.यू में दाखिल करने की ज़रूरत पड़ सकती है। समय रहते इलाज से इसमें से अधिकांश बच्चे ठीक हो जाते हैं।

प्रश्न: यदि तीसरी लहर आती है और बच्चों को प्रभावित करती है तो इस दिशा में हमारी तैयारी क्या होनी चाहिए?

अधिकांश बच्चों में यह बीमारी बहुत साधारण स्वरूप में हमारे सामने आती है जिसमें घरेलू उपचार और आवश्यक मानिटरिंग से काम चल जाता है। पिछले १५ महीनों में बड़ों का इलाज करनेवाले हमारे साथियों से अनुभव साझा करके हमने काफ़ी कुछ सीखा है । हमारी निर्देशिका भी तैयार हैं और शिशु रोग विशेषज्ञों को इसे लेकर प्रशिक्षण भी दिया गया है।

हमें ज़्यादा बड़ी संख्या में परामर्श के लिए तैयार रहना होगा, पालकों को बीमारी के बारे में जानकारी देनी होगी और संभावित ख़तरों से आगाह भी करना होगा ।

बच्चों के लिए और कोविड वार्ड और आई. सी. यू.बिस्तरों की तैयारी भी करनी होगी।

बचाव के लिये उपयुक्त व्यवहार बड़ों और बच्चों में एक जैसे ही हैं। बड़ों को उदाहरण पेश करना होगा, ख़ासतौर पर मास्क, हाथ धोने, दूरी बनाकर रखने में. २-५ वर्ष के बच्चों को भी मास्क पहनना सिखाया जा सकता है, बड़ों को भी इन सबका पालन करना होगा ।

हमारी अकादमी ने स्कूल फिर से सुरक्षित ढंग से खोलने के दिशानिर्देश तैयार किए हैं।

पते की बात : हमारी तैयारी पूरे ज़ोरों पर चालू है, हमें अधिक बिस्तरों की,आई. सी यू. और इनके अलाव भी, तैयारी करनी होगी।बीमारी की अलग-अलग अवस्थाओं के इलाज के लिए हमारे दिशानिर्देश तैयार हैं। खलबली का या घबराने का कोई कारण नहीं है।

प्रश्न: क्या बच्चों में टीकाकरण की पहल प्रतिक्रियात्मक है ?

पूरे विश्व के आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि बुजुर्गों में बच्चों की तुलना में मौतें हज़ार गुना अधिक हैं।उनका टीकाकरण हमारी प्राथमिकता है, उसके बाद अन्य वयस्कों का नम्बर आता है। उन देशों में जहां बच्चों के प्रभावित होने की दूरस्थ संभावना है वहाँ बच्चों का टीकाकरण भी विचाराधीन है।

पर्याप्त परीक्षण के बाद ही बड़ों में काम में लाई जाने वाली वैक्सीन बच्चों में काम में लाई जा सकेंगी, यदि वे सुरक्षित और कारगर साबित हुई तो।

हमारे देश में निर्मित एक वैक्सीन शीघ्र ही बच्चों के लिए परीक्षण के लिए तैयार हैं और अगर वह असरदार और सुरक्षित साबित हुई तो उपयोग के लिये शीघ्र ही मिलने लगेगी!

पते की बात : बच्चों में भी गंभीर संक्रमण की संभावना है, भले ही यह संख्या कम ही क्यों न हो।उनके टीकाकरण की दिशा में विचार आवश्यक है।इनके प्रभाव और सुरक्षित होना परीक्षणों में सुनिश्चित किया जा रहा है ।

(IAP के कोविड टास्क फ़ोर्स द्वारा २२-५-२०२१ को जारी)

हिंदी अनुवाद ; डा सांवर अग्रवाल